http://www.epitomejournals.com, Vol. 2, Issue 12, December 2016, ISSN: 2395-6968

Epitome : International Journal of Multidisciplinary Research

ISSN : 2395-6968

'कोणार्क की छाया में' ..... डॉ. दामोदर खड़से

डॉ. प्रा. एम.जे. शिवदास

हिंदी विभाग प्रमुख तथा सहयोगी प्राध्यापक

प्रा. डॉ. एन.डी.पाटील महाविद्यालय,मलकापुर

ता. शाहूवाडी, जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

Email : Shivdasmj@gmail.coms

Abstract

महाराष्ट्र सरकार की ओर से हाल ही में 'जीवन गौरव पुरस्कार' पानेवाले तथा महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठ में 'रायटर–इन–रेजिडेंस' इस मानद पद पर नियुक्ति होनेवाले कथाकार, अनुवादक, राजभाषा से संबंधित विपुल लेखन करनेवाले, तथा कवि के रुप में ख्यातकीर्द रचनाकार डॉ. दामोदर विष्णू खड़से मराठी तथा हिंदी भाषी लोगों को परिचित है। उन्होंने अब तक तीन उपन्यास, छ कथासंग्रह, सात कविता संग्रह, पंन्द्रह अनुवाद से संबंधित किताबें, चार राजभाषाविषयक किताबें, एक यात्रावर्णन तथा साक्षात्कार से संबंधित, तथा अन्य पत्र–पत्रिकाओं में विपुल साहित्य लेखन किया है। वे कथाकार, कवि, सृजक, अनुवादकर्ता के रुप में परिचित है, तथा बीस विविध पुरस्कारों से सन्मानित हस्ती है इनमें से दो पुरस्कार महामहिम राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा और राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील के द्वारा प्राप्त हो चुके है। वे 2008 में बैंक ऑफ महाराष्ट्र पुणे से सहायक महाप्रबंधक (राजाभाषा) इस पद से अवकाशप्राप्त हो चुके है भारत सरकार के वित्त मंत्रालय, रसायन व उर्वरक मंत्रालय, उर्जा मंत्रालय में हिंदी समिति पर सलाहकार सदस्य के रुप में कार्यरत रहे हैं।

उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में पुनर्गठित केन्द्रीय हिंदी समिति पर सदस्य के रुप में अपना योगदान दिया है। उनके नामपर 2015 तक विविध विधाओंसे संबंधित 50 पुस्तकें है। हम उनके द्वारा 'काला सूरज' और

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

'भगदड' इन दो उपन्यास के बारे में यहापर विचार करेंगे –

Keywords

डॉ. दामोदर खड़से, काला सूरज, भगदड, 'कोणार्क की छाया में', कथाकार

Research Paper

'काला सूरज' – हिंदी साहित्य संसार, नई दिल्ली से सन 1980 में प्रकाशित यह उपन्यास है। इस उपन्यास में कैलाश, रुपा, गीता, पामेला मुखर्जी, स्नेहा, जयेश, निमेश, समरेश बोस, अमित देवव्रत इत्यादी चरित्रों का चित्रण है।

'काला सूरज' उपन्यास का नायक कैलाश जो एक प्रेस से जुडा हुआ है। उसकी पत्रकारिता दिनो–ब–दिन रंग लाती है। वह अकोला के जिस प्रेस में कार्यरत है उसी प्रेस के मालिक की बेटी रुपा जो कैलाश की ओर आकर्षित होती है। यह रुपा अपने मां–पिता की अकेली संतान है। कुछ दिनों में प्रेस के मालिक कैलाश को अपना दामाद बनाते है। कैलाश का पूर्व जीवन असुरक्षित रहा है, उन्होंने कई अभावों का अनुभव किया है। बचपन की अवस्था में उसकी माँ गुजर जाने के बाद, उसकी मौंसी कैलाश का भरण पोषण करती है, मौसी के कोई संतान नहीं है। जब कैलाश को पढ़ाई करने हेतू शहर में रखा जाता तो मौसा हर महिने रुपयों की व्यवस्था करता है। कुछेक दिनों में मौसी के घर नया मेहमान आने पर कैलाश के प्रति मौसी का आकर्षण कम होने लगता है।

कैलाश के पास प्रतिभा है अपनी लेखनी के ताकद से वह स्वयं का स्थान पत्रकारिता में पक्का करता है, किंतु उनके स्वाभिमान को ससुर के द्वारा ठेंस पहुँचती है। वह अपने ससुर के यहाँ बौना बनकर रहना पसंद नहीं करता। अकोला से वह बंबई के लिए पत्रकारिता में अपना स्थान अजमाता है। बंबई में इसकी पत्रकारिता बहोत चमकती है। किंतु स्वछंदी, सतही पत्रकारिता उसके व्यक्तित्व में रोडे डालती है। उन्हें बंबई में मजबूर संपादक और खोखले व्यवस्थापन का दर्शन होने लगता है। उसकी मेहनत जहाँ पर पुरस्कृत होनी चाहिए तभी अपमानित स्थिति से गुजरती है। कैलाश त्यागपत्र देकर कलकत्ते के लिए अपने मित्र के पास निकलता है। इसी बीच 'गीता' नामक युवती जो कॉलेज के दिनों की सहचरी, कलकते में सहयोग देती है। गीता का विवाह 'अमित' नामक युवक के साथ हुआ है। अमित कलकत्ते में कार्यरत है।

कलकत्तें में कैलाश का मित्र समरेष बोस जो पत्रिका का संपादक है। यहाँ पर कैलाश की लेखनी अनुकूल माहौल पाती है। वह झंझावती परिवेश से झूझता है। कठीण शिखर की बुलंदी छू लेता है। उसकी पत्रकारिता पर 'पामेला मुखर्जी' नामक युवती प्रभावित होती है। पामेला का विवाह पर विश्वास नहीं है। कैलाश पामेला ये दोनों एक समय कमजोर क्षणों में एक हो जाते है। कैलाश की पत्रकारिता पुरस्कृत होती है। व्यवस्थापन की ओर से उसे संपादक की तौरपर दिल्ली भेजा जाता है। कैलाश के दिल्ली में बडे–बडे उद्योगपति, मंत्री, प्रधानमंत्री के साथ नजदीकी संबंध आते हैं।

उसे शराब की बूरी लत जकड लेती है, कल का सिध्दान्वादी और फौलादी कैलाश अब

कहीं ना कही समझौता करता है। जब वह अपनी विवाहिता पत्नी रुपा के यहाँ लौटता तो पता चलता उसके ससुर काल–कवलित हो चुके है। सास के द्वारा दिल को चोट करनेवाली बात सुनने के लिए मिल जाती है। वह कलकत्ते में पामेला के पास चला जाता जहाँ वह कमजोर पलो में भोगी और उससे उत्पन्न बेटी स्नेहा को पाता है। पामेला कैलाश को बेटी के बारे में इसलिए नहीं बताती की, कैलाश की पत्रकारिता में बाधा उत्पन्न न हो जाय। पामेला अब शादीशुदा है उसका फिल्म निर्देशक देवव्रत के साथ विवाह हुआ है। देवव्रत जो पामेला–कैलाश की ओर से जन्मी 'स्नेहा' को पाना चाहता किंतु पामेला अपनी माँ के पास स्नेहा को रखकर देवव्रत के साथ विदेश में जाकर बसती है।

जब पामेला की मॉ की ओर से स्नेहा बेटी के बारे में और देवव्रत के बारे में कुछ चिठ्ठियाँ भी कैलाश के दिल्ली के पतेपर पहुँचती है किंतु अत्याधिक व्यस्त कैलाश को वह चिठ्ठियाँ समय पर प्राप्त नहीं हो पाती। पामेला की मॉ कैलाश की अमानत स्नेहा को उसके सुपूर्द करती है। कैलाश अपनी बेटी को लेकर दिल्ली के लिए रवाना होता है।

जब वह विवाहित पत्नी रुपा के यहाँ अकोला के लिए चला जाता तो सास और पत्नी की ओर से अकोला में ही ठहरने का सुझाव मिलता किंतु स्वाभिमानी कैलाश अकोला के बजाय दिल्ली में रहना उचित मानता है।

उपन्यासकार 'काला सूरज' के द्वारा यह समझाना चाहते है कि 16 जनवरी के दिन सूर्यग्रहण जो पूरे सूर्य को काला बना देता है जो सूरज पूरे वसुंधरा को प्रकाशित करनेवाला भले ही थोडी देर के लिए अंधःकार मय बनाता है। कैलाश स्वंय चाहता मेरा भी जीवन सूर्य के समान है। रुपा, गीता या पामेला जैसी तीन–तीन युवतियाँ जीवन में आने के बाद भी वह अकेला ही जीवन बिताना चाहता है। उसका नारियों के ही कारण जीवन अंधःकारमय बन गया है।

काला सूरज के चरित्र – इस उपन्यास में सत या आदर्श चरित के रुप में जयेश, समरेश बोस, निमेश, अमित देवव्रत जैसे पात्र चित्रित है। उमित की पत्नी गीता जो विवाह के पूर्व कैलाश के साथ घटों–घंटो शहर की वाटिका में अपना समय बिताती है। गीता के पूर्व प्रेमसंबंधों की बात पति अमित को पता चलती तो गीता को बडे ही उदारता से माफ कर देता है।

'देवव्रत' – पामेला का भले ही पति है जो फिल्म निर्देषक है, उसे भी पता है कि स्नेहा जो कैलाश–पामेला की संतान है, पामेला कुमारी माता होते हुए भी स्नेहा को जन्म देना उचित मानती और यह भाव देवव्रत को अधिक भाता है।

'समरेश बोस' – जो कलकत्ते के वास्तव में कैलाश को मदद करता है। संपादक के तहत कैलाश को कुछ सुझाव भी देता है। जयेश, निमेश यह दोनों कैलाश के कॉलेज पढ़ाई के दौरान के मित्र है। जो कैलाश को समय–समयपर अच्छे–बूरे के बारे में सलाह देते है।

उपन्यासकार ने वर्णनात्मक, संवादात्मक तथा पत्रात्मक शैली के द्वारा कथानक को बुना है। जो कथानक पाठक को पर अलग प्रभाव उत्पन्न करता है। उपन्यास में समाज के

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

तमाम चरित्र उजागर होकर जीवंत हो उठते हैं। असुरक्षित और अभावग्रस्त स्थितियों में पले–बढे व्यक्ति का जीवंत दस्तावेज 'काला–सूरज' के द्वारा पाठकों के सामने आता है। परिश्रम से अभावों पर मात की जा सकती है यश और कीर्ति से जीत के शिखर पार कर सकते हैं। प्रतिकात्मक सूरज कितना भी प्रकाशमान हो, जब स्वार्थ का ग्रहण लगते पर काला पडने लगता है। रचनाकार ने नायक के संघर्ष और भटकन को मानवीय संबंधों के बीच चित्रित कर दिया है।

भगदड – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से 1996 में प्रकाशित डॉ. दामोदर खड़से का यह पारिवारिक उपन्यास है। इस उपन्यास में महावीरप्रसाद, कृष्णा, श्वेता, हर्षा, कृष्णा की माँ, विनोद, दीनानाथ पांडे, रमेश वर्मा इत्यादि चरित्रों को चित्रित किया गया है। 'भगदड़' ऐसे युवक की कथा है, जो सुख–सुविधाओं और अपना जीवनस्तर सुधारणे के हेतू महानगर में सेवारत रहता है। देहात में बसनेवाले माँ–पिता शहर में अपने इलाज के हेतू बेटे के पास आते हैं ।

इस उपन्यास में चित्रित महावीरप्रसाद जो कस्बाई संस्कृति में पले बढ़े है और स्कूल के हेडमास्टर पद से अवकाश प्राप्त हो गये । महावीरप्रसाद पेंशन पानेवाले संवेदनशील व्यक्ति तथा पिता है। इन्हें कृष्णा नामक इकलौता बेटा है। जो मुंबइ में जाकर उधर का ही हो जाता है। कृष्णा का विवाह महानगरीय संस्कृति में पली बड़ी श्वेता नामक युवती से होता है। श्वेता सेवारत महिला है। कृष्णा और श्वेता को हर्षा नामक लडकी है। बहू श्वेता महानगरीय संस्कृति का प्रतीक मात्र है। जिसके लिए जीवन सिर्फ अपने लिए सुख–सुविधाओं का एकत्रीकरण तक ही सीमित है। पोती हर्षा नन्ही जरुर है, अबोध है उस पर महानगरीय संस्कृति की छाप लगनी शुरु हो गई है।

कृष्णा के पिता महावीरप्रसाद के गले में तीन गांठे हैं। उन्हें कैंसर की आशंका लगती है। वे उन्हीं गाठों को जाँचने हेतू बेटे कृष्णा के पास महानगर में पहुँचते है। उनके पहुँचने पर पिता की बीमारी की आशंका पूरे परिवार को ग्रस लेती है। बंबई के टाटा मेमोरियल हास्पिटल में जांच के दौरान लंबी प्रक्रिया से पता चलता है कि महावीरप्रसाद को कैंसर नहीं है बल्कि टयूबरकुलोसिस या टी.बी. है।

कृष्णा के पिता महावीरप्रसाद दो पीडा के शिकार होते हैं। एक ओर शरीर को असाध्य रोग कुतर रहा है और भीतर मन मस्तिष्क में कृष्णा की चिंता। श्वेता के रुप में मिली बहू तो आत्मीय संवेदना विहीन है। वह स्वार्थ की तंग गलियों में खो जाती है। पोती हर्षा द्वारा दादा–दादी को परिचय के अभाव में 'मेहमान' कहना विसंगति भरा लगता है।

मित्र विनोद के रुप में महानगरीय तपते रेगिस्तान में ठंडी हवा का झोंका है। इस उपन्यास की कथा गांव से महानगर तक के प्रत्येक मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। जो अपने चारों ओर के परिवेश में बिछडती संवेदना, टुटते रिश्ते, दुर्लभ होते जा रहे साधन व सिर पर एक छत के लिए लंबी लडाई के बीच सुकून ढूंढ रहा है। इसमें व्यवस्था के प्रति आक्रोश है।

भगदड के चरित्र – 'विनोद' भगदड का सत पात्र है जो कृष्णा का मित्र होते हुए कृष्णा के

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

कठिन प्रसंगो में एक सच्चा रिश्तेदारों की तरह है। कृष्णा के पिताजी को अस्पताल में जाँच के लिए लाया जाता तो विनोद काफी मदत करता है।

'श्वेता की माँ' – एक असत नारी पात्र है। वह बेटी श्वेता को पोती हर्षा के लालन–पालन के लिए श्वते की साँस को गाँव से मुंबई महानगर में लाने के कहती है। इसमें स्वार्थपरता, संकोचीवृत्ति का दर्शन होता है।

'कृष्णा की माँ' – उपन्यासकार ने एक सामान्य देहाती माँ रुप में उपन्यास के अतर्गत चित्रित की है। जो अपने बहू–बेटे और पोती की खुशहाली चाहती है। वह कर्तव्यपरायण है। अपने पति के हां में हा मिलाने की वृत्ति और बेटे के प्रति प्रगति चाहनेवाली मां के रुप में चित्रित है।

संक्षेप में डॉ. दामोदर खड़से एकसवीं सदी के सशक्त रचनाकार है। उसकी पैनी नजर समाज के अनछुअें विषयों को शब्दबध्द करती है। वे एक ऐसे कथाकार है जिसको कोई नाम नहीं है, सम्मान नहीं है। ऐसे पात्रों को अपने कथा–कहानियों के द्वारा समाज के सामने लाने का महत्त्वपूर्ण काम करते हैं। उनकी रचना पाठक जब पढ़ते है तो अनुभव होता है कि हमारे आस–पास की यह घटना चित्रित है। भविष्य में उनके द्वारा ऐसी ही रचना बनती रहेगी ऐसी आशा करते हुए यहा विराम पाता हूँ ।

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.